पवित्र आत्मा

टिप्पणियाँ –

पवित्र आत्मा: पाठ्यक्रम

कक्षा #१:

I. पाठ्यक्रम परिचय।
II. पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व और उपस्थिति:
   क. पवित्र आत्मा की पहचान।
   ख. पवित्र आत्मा का स्वभाव।

कक्षा #२:

II. पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व और उपस्थिति। (जारी.)
   ग. पवित्र आत्मा के कार्य।

कक्षा #३:

II. पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व और उपस्थिति। (जारी.)
   ग. पवित्र आत्मा के कार्य।

कक्षा #४:

III. पवित्र आत्मा की सामर्थ:
   क. पवित्र आत्मा की सामर्थ का परिचय।
   ख. इस विस्फोटक शक्ति का अस्तित्व कहाँ है? हम इसका अनुभव किस प्रकार कर सकते हैं?

कक्षा #५:

III. पवित्र आत्मा की सामर्थ: (जारी.)
   ग. इस विस्फोटक शक्ति का कार्य क्या है?
   परीक्षा।

पवित्र आत्मा

टिप्पणियाँ –

पवित्र आत्मा: परीक्षा

संभावित २० सूत्रीय प्रश्न

१) पवित्र आत्मा की व्याख्या करने के लिए प्रयोग किए जाने वाले किन्हीं तीन शीर्षकों का चयन करें (पृष्ठ २२६, २२७)।

२) इस तथ्य का प्रतिवाद करें कि पवित्र आत्मा केवल एक व्यक्तित्व हैं, न कि व्यक्तित्वहीन बल या प्रभाव (पृष्ठ २३२, २३३)।

३) नया जीवन पाने में पवित्र आत्मा के कार्य की व्याख्या करें (पृष्ठ २३५, २३६)।

४) लूका ११:५-१३ का प्रयोग करें और आत्मिक वरदानों से संबंधित कुछ सिद्धांतों की व्याख्या करें (पृष्ठ २५४-२५६)।

५) पवित्र आत्मा की विस्फोटक शक्ति का अस्तित्व कहाँ है? हम पवित्र आत्मा को किस प्रकार ग्रहण कर सकते हैं (पृष्ठ २६०-२६५)?

६) पवित्र आत्मा की विस्फोटक शक्ति का उद्देश्य क्या है (पृष्ठ २६६-२६८)?

संभावित १० सूत्रीय प्रश्न

१) **एकमात्र** पवित्र आत्मा कहना क्यों महत्वपूर्ण है (पृष्ठ २२५)?

२) पवित्र आत्मा के नाम के पांच रूपों की सूची बनाएं (पृष्ठ २२५)।

३) पवित्र आत्मा के चार प्रतीकात्मक विवरण की सूची बनाएं (पृष्ठ २२८-२३१)।

४) पवित्रशास्त्र के किसी एक पद का प्रयोग करके ये दर्शाएँ की पवित्र आत्मा परमेश्वर हैं (पृष्ठ २३१)।

५) पवित्रशास्त्र के एक पद का प्रयोग करके एक तरीका दिखाएँ जिसमें पवित्र आत्मा के पास ईश्वरीय विशेषताएं हैं (पृष्ठ २३२)।

६) पुनरुत्थान में पवित्र आत्मा की सहभागिता को पवित्रशास्त्र के किसी एक पद से दर्शाएँ (पृष्ठ २३७)।

७) पुराने नियम में पवित्र आत्मा के किसी एक विशेष कार्य अथवा अधिकार की व्याख्या करें (पृष्ठ २३८-२४१)।

८) "आने वाले" पर पवित्र आत्मा के बड़े अभिषेक के छह विभिन्न रूपों की सूची बनाएं (पृष्ठ २४२)।

९) दिखाएं कि बपतिस्में के बाद पवित्र आत्मा द्वारा यीशु का अभिषेक किस प्रकार त्रिएक परमेश्वर को प्रकट करता है (पृष्ठ २४७)।

१०) यूनानी शब्द "**इयूनामिस**" की व्याख्या करें (पृष्ठ २५९)।

११) ये विस्फोटक आत्मा कहाँ उपस्थित नहीं है (पृष्ठ२५९)।

१२) बाइबल का कोई एक वचन बताएं जो पवित्र आत्मा की सामर्थ्य को धीरज और आनंद के साथ जोड़ता है (पृष्ठ ६६)।

पवित्र आत्मा

टिप्पणियाँ —

I. पाठ्यक्रम परिचय।

क. पवित्र आत्मा का महत्व (देखें उत्पत्ती १:२; यूहन्ना १६:७; प्रकाशितवाक्य २२:१७)।

१. सृष्टि की रचना से पूर्व और प्रभु यीशु मसीह के इस पृथ्वी से स्वर्गारोहण से युग के अंत तक, हम बाइबल में पवित्र आत्मा के महत्व को पाते हैं।

२. पवित्र आत्मा की सेवकाई इतनी महत्वपूर्ण है कि स्वयं प्रभु यीशु मसीह ने कहा कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं जाऊंगा तो पवित्र आत्मा को तुम्हारे पास भेजूंगा।

३. पवित्र आत्मा का होना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि परमेश्वर का क्योंकि पवित्र आत्मा परमेश्वर हैं।

ख. इस पाठ्यक्रम की सामग्री।

१. पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व और उसकी उपस्थिति।

क. सर्वप्रथम हम त्रिएकता के एक व्यक्तित्व के बारे में अध्ययन करेंगे जिन्हें पवित्र आत्मा के नाम से जाना जाता है। हम उनकी पहचान और उनके स्वभाव पर विचार करेंगे।

ख. तत्पश्चात, हम पवित्र आत्मा की उपस्थिति का अध्ययन करेंगे। हम पवित्र आत्मा की गतिविधियों पर विचार करेंगे।

ग. पाठ्यक्रम के इस भाग की अधिकांश सामग्रियां रीजेंट विश्वविद्यालय[१] के डॉ. जे.आर. विलियम्स की शिक्षाओं पर आधारित हैं। अनुमति द्वारा प्रयुक्त।

२. पवित्र आत्मा की सामर्थ।

क. यहां पर हम प्रेरितों के काम १:८ में दिए गए यूनानी शब्द **इयूनामिस** (शक्ति) पर ध्यान केन्द्रित करेंगे।

१) यीशु मसीह ने अपने चेलों से कहा कि पवित्र आत्मा के लिए बाट जोहते रहो क्योंकि जब पवित्र आत्मा आएगा तब वे **इयूनामिस** (सामर्थ) पाएंगे।

२) हम ने "डायनामाइट" शब्द **इयूनामिस** शब्द से लिया है ("डायनामाइट" एक रासायनिक विस्फोटक पदार्थ है जिसका उपयोग अक्सर निर्माण और विनाश में किया जाता है)।

टिप्पणियाँ –

ख. "विस्फोटक शक्ति" पर आधारित दो प्रश्नों के अनुसार पाठ्यक्रम का ये भाग दो खंडों में विभाजित होगा।

१) विस्फोटक शक्ति का अस्तित्व कहाँ है?

२) विस्फोटक शक्ति का क्या कार्य है?

II. पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व और उपस्थिति।

क. पवित्र आत्मा की पहचान।

१. उनका नाम उनकी पहचान है।

क. आत्मा।

१) आत्मा अभौतिक है, फिर भी यह मानवजाति के अस्तित्व की आवश्यक वास्तविकता है। इसके विपरीत है:

क) मांस (यशा. ३१:३)।

ख) मांस और हड्डियाँ (लूका २४:३९)।

२) शब्द **आत्मा** गति या कार्य की स्वतंत्रता को प्रगट करता है (देखें २ कुरिन्थियों ३:१७ और यूहन्ना ३:८)।

३) यह शक्ति, बल और विस्फोटक गति को भी दर्शाता है (देखें उत्पत्ति १:२ और प्रेरितों के काम २:२)।

ख. पवित्र।

१) यहाँ हम पवित्रता का एक विचार रखते हैं। पवित्रता साधारण से अलग है इसके साथ एक भय की भावना जुड़ी हुई है।

क) हमारे पास "महिमा" का विचार भी है (निर्गमन १५:११)।

ख) पवित्रता निर्मलता को भी दर्शाते हैं।

टिप्पणियाँ –

ग. एकमात्र।

१) उन्हें **एकमात्र** पवित्र आत्मा कहते हैं।

२) वह सबसे अलग हैं। कोई दूसरा पवित्र आत्मा नहीं है।

२. उनके नाम की विविधताएं।

क. नए नियम में **पवित्र आत्मा** के नाम को निम्नलिखित अन्य नामों के साथ बदला जा सकता है:

१) आत्मा (लूका ४:१,२)।

२) परमेश्वर का आत्मा (मत्ती १२:२८, ३२)।

३) मसीह का आत्मा (रोमियों ८:९)।

४) तुम्हारे पिता का आत्मा (देखें मत्ती १०:२० और लूका १२:१२)।

चर्चा का बिन्दु

इन विविधताओं और बदलावों के संबंध में त्रिएकत्व के बारे में क्या कहा जा सकता है?

ख. पुराने नियम में पवित्र आत्मा के नाम को निम्नलिखित नामों के साथ बदला जा सकता है:

१) अपने पवित्र आत्मा (देखें भजन ५१:११; यशा. ६३:१०,११)।

२) वह/मेरा/तेरा/उसका आत्मा (उत्पत्ति १:२;६:३; गिनती ११:२६; भजन १०४:३०; अय्यूब ३४:१४)।

३) प्रभु का आत्मा (सबसे सामान्य रूप से लिया गया नाम)।

टिप्पणियाँ –

चर्चा का बिन्दु

पवित्र आत्मा और परमेश्वर की बीच में संबंध का क्या आशय है?

३. पवित्र आत्मा के शीर्षक।

क. सत्य का आत्मा (देखें यूहन्ना १४:१६, १७; १५:२६; और १६:१३)।

१) सत्य यीशु मसीह पर केन्द्रित है (यूहन्ना १४:२६;१५:२६ और १६:१४,१५) क्योंकि वह ही सत्य है (यूहन्ना १४:६)।

२) ये सत्य सांसारिक ज्ञान से परे है। इस सत्य को संसार **ग्रहण नहीं करता है** (यूहन्ना १४:१७)। इस बिंदु के संबंध में १ कुरि २:१४ भी देखें।

ख. पवित्रता की आत्मा (देखें रोमि. १:४ और रोमि. ८:११)।

१) पवित्रता का आत्मा वह आत्मा है जो एक विश्वासी को पवित्र करता है।

२) पवित्रता का आत्मा वही आत्मा है जिन्होंने मसीह यीशु को मृतकों में से जिलाया।

ग. जीवन का आत्मा (रोमियों ८:२: २कुरि. ३:६ और यूहन्ना ६:३६)।

१) एक विश्वासी व्यवस्था के बंधन से इस अभिप्राय से मुक्त हो जाता है कि वह अब "व्यवस्था की उचित आवश्यकता" को पूरा करने में सक्षम है (रोमि. ८:४)। वह ऐसा इसलिए कर सकता है क्योंकि उसके पास मसीह है (गला. २:२०) जो पहले से ही व्यवस्था को पूरा कर चुका है (मत्ती ५:१७)।

२) हम व्यवस्था से स्वतंत्र हुए हैं क्योंकि हमने व्यवस्था का पालन किया। हम व्यवस्था का पालन इसलिए कर पाए क्योंकि अब हम शरीर के अनुसार नहीं परन्तु आत्मा (जीवन के आत्मा) के अनुसार चलते हैं (रोमियों ८:४)।

टिप्पणियाँ —

घ. लेपालकपन की आत्मा (देखें रोमियों ८:१५ और गलातियों ४:५,६)।

१) हम परमेश्वर के परिवार में गोद लिए गए हैं। इस प्रकार पवित्र आत्मा को हमारे हृदयों में भेजा है। इस संदर्भ में उसे लेपालकपन की आत्मा के रूप में पहचाना जाता है।

२) पवित्र आत्मा की ये पहचान उस व्यक्तिगत संबंध के विषय में बात करती है जो अब हमारा परमेश्वर के साथ है। वह हमारे पिता हैं (जैसा कि अरामी नाम का अनुवाद किया जाना चाहिए)। परमेश्वर की आत्मा के द्वारा, हमारा न केवल परमेश्वर के साथ संबंध है, परन्तु यह एक गहरा, निजी, व्यक्तिगत संबंध है।

ङ. अनुग्रह की आत्मा (देखें इब्रानियों १०:२९)।

१) अनुग्रह की आत्मा वह आत्मा है जो हमारे उद्धार में अनुग्रहपूर्वक कार्य कर रही है।

२) वह हमें मसीह के कार्य की ओर खींचते हैं (यूहन्ना १६:७-१५)।

च. महिमा की आत्मा (देखें १ पतरस ४:१४)। यह विशेष रूप से मसीह के लिए दुख उठाने से जुड़ा है।

छ. सनातन आत्मा (देखें इब्रानियों ९:१४)।

१) वह आदि या अंत के बिना है।

२) पवित्र आत्मा को सनातन आत्मा कहा जाता है। उन्हें हम जीवन का आत्मा भी कहते हैं। हम ये भी कह सकते हैं कि वह अनंतकाल का आत्मा हैं। यह लेपालकपन की आत्मा के रूप में उनकी पहचान पर ज़ोर देने के अनुरूप होगा क्योंकि यूहन्ना १७:३ में बताया गया है कि परमेश्वर को जानना ही अनन्त जीवन है (एक गहरा, निजी, व्यक्तिगत प्रकार का ज्ञान)।

चर्चा का बिन्दु

पवित्र आत्मा के शीर्षक और पवित्र आत्मा के चरित्र के बीच संबंध पर चर्चा करें। परमेश्वर और यीशु मसीह के शीर्षक और चरित्र के संबंध में इसी संबंध पर संक्षेप में चर्चा करें।

टिप्पणियाँ —

४. पवित्र आत्मा का प्रतीकात्मक वर्णन।

क. हवा।

१) इब्रानी शब्द "ruach" का अर्थ "हवा" या "आत्मा" हो सकता है। उत्पत्ति १:२ के संभावित अनुवादों पर ध्यान दें।

२) यूनानी शब्द "pneuma" का अर्थ भी "हवा" या "आत्मा" हो सकता है। यूहन्ना ३:८ में शब्द के दोहरे उपयोग पर ध्यान दें।

३) पिन्तेकुस्त के दिन हम पवित्र आत्मा (हवा द्वारा दर्शाना) को उतरते हुए देखते हैं (प्रेरितों २:२)।

४) शब्द "ruach" का अर्थ "श्वास" भी हो सकता है।

क) यहेजकेल ३७:५, ९ में पवित्र आत्मा का वर्णन श्वास के रूप में किया गया है इस पर विचार करें।

ख) यूहन्ना २०:२२ में दिए गए विवरण पर विचार करें।

५) पवित्र आत्मा के इस प्रकार के विवरण उस पर एक विस्फोटक बल एवं ईश्वरीय शक्ति के रूप में केन्द्रित करते हैं।

ख. अग्नि।

१) मत्ती ३:११ और लूका ६:१६ में पवित्र आत्मा और अग्नि के बीच में एक घनिष्ठ संबंध को देखा गया है। अग्नि बुराई का अंत करने के साथ जुड़ी हुई है (मत्ती ३:११; और लूका ३:१६)।

२) ध्यान दें कि यशायाह ४:४, ५ में न्याय की अग्नी किस प्रकार महिमा की ज्वलंत अग्नि बन जाती है।

३) प्रेरितों के काम २:३, ४ के प्रकाश में पिछले बिंदुओं के आशय पर विचार करें। अग्निमय जीभें, बोले गये शब्द की शुद्ध करने वाली शक्ति को दर्शाती हैं।

टिप्पणियाँ —

ग. जल।

१) पवित्र आत्मा का व्याख्यात्मक चिन्ह बहता हुआ जल है। ध्यान दें, कि यह पानी कभी रुकता नहीं है (देखें यूहन्ना ७:३७-३९; यूहन्ना ४:१०, १४; यशा. ४४:२, ३ और यशा. ३२:१५)।

२) आत्मा के इन विचारों के संबंध में, हम यहेजकेल ४७:१-९; जकर्याह ४७:१-९ और प्रकाशितवाक्य २२:१, २ पर भी विचार कर सकते हैं।

घ. कबूतर।

१) कबूतर का सबसे साधारण प्रतिरूप हम प्रभु यीशु के बपतिस्में के समय देखते हैं जब स्वर्ग से उनके ऊपर कबूतर उतरा (लूका ३:२२)।

२) नम्रता और निर्मलता कबूतर का प्रतीकात्मकता हो सकता है (मत्ती १०:१६)।

३) ये पवित्र आत्मा की जीवनदायक गतिविधि की ओर संकेत कर सकता है।

क) उत्पत्ति १:२ में हम पवित्र आत्मा को एक पक्षी के समान पानी पर "मंडराते" हुए देखते हैं, जैसे ही परमश्वेर जीवन को लाने की तैयारी करते हैं।

ख) नूह एक कबूतर को ज़हाज के बाहर भेजता है। यह पृथ्वी पर जीवन की वापसी को दर्शाता है।

४) कबूतर की प्रतीकात्मकता को बलिदान के रूप में भी देखें।

क) इसका उपयोग पुराने नियम के बलिदानों में किया गया था (उत्पत्ति १५:९)।

ख) हमें एक कबूतर की नम्रता और यीशु की सेवकाई की नम्रता (मत्ती १२:२०) और उनकी मृत्यु की इच्छा को याद दिलाया जाता है (यशायाह ५३:७)।

टिप्पणियाँ –

५) कबूतर का एक अन्य संभावित प्रतीकवाद छुटकारे से संबंधित है।

क) यहूदी प्रथा में श्रेष्ठगीत २:१२ के अनुसार पिंडुक के शब्द का अर्थ पवित्र आत्मा के शब्द के रूप में वर्णन किया गया है।

ख) याद रखें कि प्रभु यीशु की छुटकारे की सेवकाई तब शुरू हुई जब उन पर पवित्र आत्मा कबूतर के नाई उतरा।

ङ. **मुहर।**

१) पवित्र आत्मा का प्रतीक परमेश्वर के स्वामित्व और सुरक्षा को दर्शाता है (देखें इफिसियों १:१३, १४ और इफिसियों ४:३०)।

क) मुहर इस बात को दर्शाती है कि किसी वस्तु पर उसका कोई अधिकारी है। विश्वासी को पवित्र आत्मा यह दिखाने के लिए दिया जाता है कि वह परमेश्वर का है।

ख) पवित्र आत्मा विश्वासी की सुरक्षा के लिए दिया गया है। एक मुहर किसी की सुरक्षा का चिन्ह है (देखें प्रकाशितवाक्य ७:३)।

२) प्रतीक प्रत्याभूति या प्रतिज्ञा के रूप में भी है।

क) मुहर भविष्य संपत्ति के स्वामित्व का प्रमाण है। यह एक प्रतिज्ञा है।

ख) २ कुरि. १:२२ के सन्दर्भ में इस बिंदु पर विचार करें।

३) मुहर पुष्टीकरण अथवा समर्पण के चिन्ह का प्रतिनिधित्व कर सकता है (देखें यूहन्ना ६:२७)।

४) मुहर के प्रतीकवाद में पवित्र आत्मा एक विश्वासी के जीवन में उसके उधार के निश्चय के क्षेत्र में कार्य करता है।

टिप्पणियाँ —

च. तेल।

१) अभिषेक करने या मरहम के विचार के माध्यम से तेल पवित्र आत्मा से जुड़ा हुआ है।

क) जैसे ही पवित्र आत्मा यीशु पर उतरे उन्होंने कहा "प्रभु का आत्मा मुझ पर है" (लूका ४:१८)।

ख) यूहन्ना १४:२६ के प्रकाश में १ यूहन्ना २:२०, और २७ पर विचार करें।

२) १ शमूएल १६:१२,१३ में अभिषेक के संबंध पर विचार करें)।

चर्चा का बिन्दु

पवित्र आत्मा के विभिन्न प्रतीकात्मक विवरणों पर विचार करें: हवा, श्वास, अग्नि, जल, कबूतर, मुहर और तेल। क्या आप बाइबल के कई वचनों में पवित्र आत्मा की उपस्थिति को देख सकते हैं जिन्हें अन्यथा, आप पहचान नहीं पाते? क्या ये हो सकता है कि हम पवित्र आत्मा की विस्फोटक उपस्थिति को पवित्रशास्त्र के वचनों में और अपने दैनिक जीवन में कम करके आंकें।

ख. पवित्र आत्मा का स्वाभाव।

१. पवित्र आत्मा परमेश्वर हैं।

क. इसमें ईश्वरीय मान्यता और पहचान है।

१) प्रेरितों के काम की संपूर्ण पुस्तक में पवित्र आत्मा को एक परमेश्वर के रूप में दर्शाया गया है (देखें १५:२८;२१:११;२८:२५)।

२) अध्ययन करें प्रेरितों के काम ५:३,४। ध्यान दें कि किस प्रकार पवित्र आत्मा और परमेश्वर के बीच आदान प्रदान किया जाता है (मत्ती १२:३१,३२ में भी देखें)

३) हम **परमेश्वर** के मंदिर हैं क्योंकि **पवित्र आत्मा** हम में वास करते हैं (देखें १कुरि. ३:१६)।

४) हमारा यह समझना भी ज़रूरी है कि पवित्र आत्मा से भरना परमेश्वर उपस्थिति से भरने के समान है।

टिप्पणियाँ —

ख. आत्मा में ईश्वरीय विशेषताएं हैं।

१) वह सर्वव्यापी हैं, अर्थात सभी जगह उपस्थित या हर जगह कभी भी उपस्थित होने वाले (देखें भजन. १३९:७-१० और यूहन्ना १४:१६,१७)।

२) वह सर्वज्ञानी हैं अर्थात संपूर्ण ज्ञान रखने वाले (देखें यशा. ४०:१३;१ कुरि. २:१; और यूहन्ना १६:१३)।

३) वह सर्वशक्तिमान हैं अर्थात सब में सबसे सामर्थी (देखें अय्यूब ३३:४; और १ कुरि. १२:११)।

ग. आत्मा ईश्वरीय कार्य करते हैं।

१) हम अगले खण्ड में इस बिंदु पर विस्तृत अध्ययन करेंगे।

२) यदि आत्मा परमेश्वर का कार्य करते हैं तो उसे स्वयं भी परमेश्वर होना चाहिए।

२. पवित्र आत्मा एक व्यक्तित्व हैं।

क. उन्हें व्यक्तिगत उपाधियाँ दी गई हैं।

१) उन्हें दिलासा देने वाला और सहायक कहा जाता है (यूहन्ना १४:१६,२६; १५:२६;१६:७)। यूनानी में ये शब्द पुरुष लिंग में है यह नपुंसक (अर्थात बिना किसी लिंग की पहचान का) नहीं है।

२) यूहन्ना १६:१३ आत्मा शब्द के बाद एक पुल्लिंग सर्वनाम आता है।

३) व्यक्तिगत सर्वनामों (मैं और मैं) पर ध्यान दें जो प्रेरितों. १३:२ में पवित्र आत्मा को संदर्भित करने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

ख. उनके पास व्यक्तिगत विशेषताएं हैं।

१) उनके पास बुद्धि है।

क) वह बातचीत करते हैं (प्रेरितों. १३:२)।

ख) वह हमारी अगुवाई करते हैं और निर्णय लेते हैं (प्रेरितों. १५:२८)।

ग) वह सोच विचार करते हैं (रोमियों ८:२७)।

टिप्पणियाँ –

२) उनके पास इच्छाशक्ति है (देखें प्रेरितों. १६:६, ७; १ कुरि. १२:११; व उत्प. ६:३)।

३) उनके पास भावनाएँ हैं (देखें यशा. ६३:१०; इफि. ४:३०; और रोमि. ८:२६)।

ग. उनके पास व्यक्तिगत संबंध हैं।

१) यीशु के साथ संबंध।

क) वह उनकी अगुवाई करते हैं और उन्हें भेजते हैं (लूका ४:१, २)।

ख) वह यीशु की महिमा करने के लिए उनकी बातों में से लेते हैं (यूहन्ना १६:१४)।

२) विश्वासियों के साथ संबंध (देखें प्रेरितों. २०:२३ और २कुरि. १३:१४)।

३. पवित्र आत्मा परमेश्वर हैं, फिर भी वह एक विशिष्ट व्यक्ति हैं।

क. उत्पत्ति १:१, २ का अध्यन इस बात को दर्शाता है कि परमेश्वर और परमेश्वर का आत्मा दो भिन्न व्यक्तित्व हैं। ये दर्शाता है कि इन दोनों में भिन्नता है लेकिन अलगाव नहीं है।

ख. यीशु स्वयं परमेश्वर हैं और परमेश्वर के साथ थे (यूहन्ना १:१) पवित्र आत्मा परमेश्वर हैं और वह परमेश्वर की ओर से हैं (देखें भजन. १०४:३०; यशायाह ४४:३; यूहन्ना १४:२६; १५:२६; १६:७)।

ग. पवित्र आत्मा पिता की ओर से आते हैं (यूहन्ना १५:२६)।

१) यह पिता की ओर से भेजे जाने से अलग है, पिता निर्धारित करते हैं कि पवित्र आत्मा को कब भेजना है। हालाँकि, आत्मा अनंतकाल के लिए पिता से निकलती है (१५:२६ में दिए गए वर्तमान काल की निरंतर प्रकृति पर ध्यान दें) ये किसी निर्णय लेने के द्वारा नहीं परन्तु परमेश्वर के स्वभाव के अनुसार होता है।

२) इस बिंदु पर, हम त्रिएकता की विरोधाभासी चर्चा में प्रवेश करना शुरू करेंगे। त्रिएकता एक गहरा रहस्य है।

चर्चा का बिन्दु

इस अवधारणा पर आगे चर्चा करें कि पवित्र आत्मा परमेश्वर है,
फिर भी परमेश्वर से अलग हैं।
उनके बीच क्या भिन्नताएँ हैं?

टिप्पणियाँ —

ग. पवित्र आत्मा की गतिविधि।

१. सृष्टि।

क. परमेश्वर अपनी सृष्टी के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं।

ख. पवित्र आत्मा की उपस्थिति के माध्यम से (उत्पत्ति १:२), परमेश्वर रचनात्मक व्यवस्था लाते हैं (उत्पत्ति १:२अ)।

१) पवित्र आत्मा सृष्टि की तैयारी कर रहे थे। उन्होंने सृष्टि के घटित होने के लिए ऊर्जा को उपलब्ध कराया। वह सृष्टि की प्रक्रिया में पूरी तरह से सम्मिलित हैं।

क) बाद में, हम इसे सृष्टिकर्ता के बहुवचन संदर्भों में और अधिक स्पष्ट रूप से देखते हैं (उत्पत्ति १:२६)।

ख) उत्पत्ति १:१ पर विचार करते हुए यह याद रखें कि यहाँ "परमेश्वर" के लिए इब्रानी शब्द बहुवचन में है (भजन ३३:६ भी देखें)।

२) पवित्र आत्मा जीवन की रचना में सम्मिलित हैं वह सृष्टि के वास्तविक समय में सम्मिलित थे और सृष्टि की चल रही प्रक्रिया में भी सम्मिलित हैं (देखें भजन १०४:३०; उत्पत्ति २:७; और अय्यूब ३३:४)।

क) मूल सृष्टि में सारी मानवजाति, जीवन की आत्मा पर निर्भर है (रोमियों ८:२; २ कुरि. ३:६)।

(१) प्रेरितों. १७:२८ के निहितार्थ पर विचार करें।

(२) अय्यूब ३४:१४, १५ पर विचार करें। विचार यह है कि यदि परमेश्वर अपना आत्मा अपने ही में समेट लें, तो सभी मनुष्य फिर मिट्टी में मिल जायेंगे।

ख) इस तथ्य पर विचार करें कि पुराने नियम में आत्मा की श्वास है जो मूल सृष्टि में सभी मानव जाति को प्रभावित करती है। कुछ व्यक्तियों में पवित्र आत्मा से भरा जाना भी है (निर्ग. ३१:३)। इस बात को ध्यान में रखते हुए, हम कैसे समझा सकते हैं कि नए नियम में आत्मा का श्वास (यूहन्ना २०:२२) और आत्मा का भरना है (प्रेरितों. २:४)?

टिप्पणियाँ —

२. प्रभुता।

क. परमेश्वर न केवल सृष्टिकर्ता हैं, बल्कि वह अपनी सृष्टि को बनाए रखते हैं। वह अपनी आत्मा के द्वारा अपनी सृष्टि पर प्रभुता करते हैं।

१) उनके सिद्धांत को देखने के लिए अय्यूब ३४:१४, १५ की समीक्षा करें।

२) परमेश्वर की सृष्टि पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा बनाई और बनी हुई है (देखें इब्रानियों १:३; और प्रेरितों. १:८)।

ख. अपनी प्रभुता में, परमेश्वर न केवल अपनी सृष्टि को बनाए रखते हैं, बल्कि वह अपनी सृष्टि की अगुवाई भी करते हैं। परमेश्वर की आत्मा के माध्यम से, परमेश्वर सृष्टि के निर्माण के बाद उनमें सम्मलित हैं (देखें भजन. १३९:७-१०; यशायाह ६३:११-१४; और हाग्गै २:४,५)।

३. देहधारण।

क. पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा, यीशु मसीह मरियम की गर्भ में आया और मरियम गर्भवती हुई।

ख. अध्ययन करें लूका १:३५ और मत्ती १:२०।

१) इन पदों की तुलना उत्पत्ति १:२ से करें।

२) कोई कह सकता है कि शून्य से कुछ बनाना असंभव है। हालांकि, हम जानते हैं कि परमेश्वर के साथ "कुछ भी असंभव नहीं है" (लूका १:३७)।

४. नया जीवन।

क. जिस तरह पवित्र आत्मा की सामर्थ्य का प्रयोग मूल सृष्टि के लिए किया गया था, उसी प्रकार पवित्र आत्मा की सामर्थ्य मसीह में हमें नयी सृष्टि बनाती है।

टिप्पणियाँ —

ख. नये जीवन की अवधारणा में आत्मा की भूमिका पर ध्यान दें (देखें यहेज. ३६:२५-२७)।

१) ध्यान दें कि पवित्रशास्त्र यह नहीं कहता कि नयी सृष्टि को व्यवस्था का पालन करने की आवश्यकता नहीं। यह अवश्य कहता कि नई सृष्टि व्यवस्था के अनुसार चल पाएंगे।

२) आत्मा कारण है। वह प्रभाव नहीं है। आत्मा को अर्जित नहीं किया जा सकता।

ग. पिछले वचनों के प्रकाश में यहेजेकेल ३७:९,१०,१४ पर भी विचार करें।

घ. अब यूहन्ना ३:५-८ का अध्यन करें।

क) यहाँ हम जल, पवित्र आत्मा और वायु को देखते हैं जो हमने यहेजकेल ३६ और ३७ में देखा था। हम फिर से देखते हैं कि नये जन्म या पुन: जीवन के लिए एक ही विचार है।

ख) नया जन्म लेना स्वर्ग से जन्म लेना या आत्मा द्वारा जन्म पाना है।

ग) ध्यान दें: यीशु का शारीरिक जन्म पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ था।

ङ. यूहन्ना २०:२२ में, हम वही शब्द (**श्वास**) देखते हैं जो उत्पत्ति २:७ और यशायाह ३७:९ में है। मूल रूप से उत्पति २:७ में सृष्टि और निर्माण था। अब नयी सृष्टि और नया जीवन है।

१) नए जीवन में यह तथ्य सम्मलित हैं कि पवित्र आत्मा अब विश्वासी के अंदर वास करता है (यूहन्ना १४:१७)।

२) एक विश्वासी अब **पवित्र आत्मा का मंदिर** है (१ कुरि. ६:१९)।

३) इसीलिए, मसीह हम में जीवित हैं (कुलु. १:२७; गला. २:२०)।

४) यह मसीहियत के लिए एक जाँच, एक परीक्षा या एक प्रमाण प्रदान करते हैं (रोम. ८:९; २ कुरि. १३:५)।

टिप्पणियाँ —

५. पवित्रीकरण।

क. पवित्रता की आत्मा होने के कारण, विश्वासियों का पवित्रीकरण करना पवित्र आत्मा की गतिविधि का एक विशेष हिस्सा है।

ख. पवित्रीकरण एक प्रक्रिया है (देखें २ कुरि. ७:१;१ थिस्स. ५:२३; फिलि. २:१२,१३)।

ग. शरीर के साथ युद्ध में हमें कदम कदम पर विजय प्राप्त होती है। इस प्रक्रिया में हमें **शरीर के कामों को** निरंतर मारना होता है (रोम ८:१३)।

१) यह हमें पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है (गलातियों ५:१६)।

२) व्यक्तिगत विजयों का फल आत्मा के फल के रूप में आता है (गलातियों ५:२२)।

६. पुनरुत्थान।

क. अंतिम पुनरुत्थान में पवित्र आत्मा की गतिविधि का कार्य उच्चतम शिखर पर होगा।

ख. पुनरुत्थान के समय, हम **आत्मिक देह के साथ जी उठेंगे** (१ कुरि. १५:४४), और हम पवित्र आत्मा द्वारा जी उठेंगे (रोमियों ८:११)।

१) पवित्र आत्मा रचयिता हैं।

२) पुनः निर्माण करते हैं।

३) वह मृतकों को जिलाते हैं (पुनर्जीवित या पुनः निर्माण करते हैं)।

टिप्पणियाँ —

घ. विश्वास के समुदाय में पवित्र आत्मा का कार्य।

लेखक की टिप्पणी:

पवित्र आत्मा की अधिकांश गतिविधि कलीसिया के जीवन के भीतर ही की जाती है। शायद, ये आत्मा की सबसे व्यावहारिक गतिविधियाँ हैं। पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों को कुछ कार्य करने में सक्षम बनाते हैं।

पवित्र आत्मा की गतिविधि के इस पहलू को तीन भागों में बांटा गया है:

१. पुराने नियम में विशेष नियुक्त कर्म और कार्य।

२. मसीही कार्य (इसमें यीशु की सेवकाई सम्मलित है)।

३. कलीसिया के भीतरी कार्य।

१. पुराने नियम में विशेष नियुक्त कर्म और कार्य।

क. निवास-स्थान और मंदिर की रूप-रेखा।

१) निवास-स्थान (देखें निर्गमन ३१:३-५)। यहाँ हम पवित्र आत्मा को एक विशेष कार्य को करने के लिए कार्यान्वित होते हुए देखते है।

२) मंदिर (देखें १ इतिहास २८:१२ एनआईवी अनुवाद में; निर्गमन ४०:३४; और २ इतिहास ५:१३,१४)। पवित्र आत्मा के कार्यान्वित होने के परिणाम की तुलना इन स्थितियों में करें।

ख. लोगों की अगुवाई करना।

१) गिनती ११:१७ अध्ययन करें।

क) मूसा ने लोगों की अगुवाई पवित्र आत्मा के कार्य के द्वारा की।

ख) फिर, जब ७० अन्य लोगों को आत्मा दी गई, तब इस्राएल की अगुवाई अधिकता के नेतृत्व में हुई।

टिप्पणियाँ –

२) गिनती २७:१६ और व्यवस्था ३४:९ का अध्ययन करें। हम फिर से देखेंगे कि किस प्रकार अगुवाई पवित्र आत्मा से जुड़ी हुई है।

ग. न्याय करना।

१) मूसा और यहोशू की अगुवाई के समय काल के बाद, इस्राएलियों की अगुवाई "न्यायियों" द्वारा की गयी थी। इन न्यायियों को पवित्र आत्मा द्वारा इस्राएल के शत्रुओं से लड़ने और इस्राएल का न्याय करने और शासन करने के लिए सक्षम किया गया था।

२) निम्नलिखित उदाहरणों को देखें:

क) ओत्नीएल (न्यायियों ३:१०)।

ख) गिदोन (न्यायियों ६:३४)।

ग) यिप्तह (न्यायियों ११:२९)।

घ) शिमशोन (न्यायियों १३:२५; १४:६; १४:१९; १५:१४)।

घ. राज्य करना।

१) जब हम इस्राएल के इतिहास को देखते हैं, तो हम राजाओं के काल में आते हैं। हम राजाओं के शासन में पवित्र आत्मा की गतिविधि देख सकते हैं।

क) शाऊल (१ शमूएल ११:६ और १ शमूएल १६:१४)।

ख) दाऊद (१ शमूएल १६:१३)।

(१) शाऊल और दाऊद के बीच अंतर यह था कि दाऊद ने कभी आत्मा को नहीं खोया।

(२) हालाँकि, भजन ५१:११ में हम इस विचार की हताशा को महसूस कर सकते हैं कि ऐसा संभव था।

२) दाऊद के बाद, राजाओं के शासन से संबंधित आत्मा की गतिविधि का कोई अन्य उल्लेख नहीं था।

टिप्पणियाँ —

ड. भविष्यद्वाणी करना।

१) ७० प्राचीनों का मामला (देखें गिनती ११:२५)।

२) एलदाद और मेदाद का मामला।

क) गिनती ११:२६-२९ में आत्मा भविष्यद्वाणी के साथ जुड़ा हुआ है।

ख) ध्यान दें कि हम पवित्र आत्मा को लोगों के एक विशेष समूह या किसी विशेष स्थान तक सीमित नहीं कर सकते है।

(१) एलदाद और मेदाद ७० प्राचीनों के समूह का हिस्सा नहीं थे।

(२) उन्होंने निवास-स्थान में भविष्यद्वाणी नहीं की।

३) बिलाम का मामला (देखें गिनती २४:२,३,९)।

४) शाऊल का मामला (देखें १ शमूएल १०:५,६,१२ और १ शमूएल १९:२१-२४)।

५) दाऊद का मामला (देखें २ शमूएल २३:१,२) दाऊद के जीवन में उसकी भविष्यद्वाणी के साथ पवित्र आत्मा के संबंध को देखें।

६) अन्य मामले।

क) अमासै (१इति. १२:१८)।

ख) मीकायाह (१ राजा २२:२४; २ इति १८:२३)।

ग) यहजीएल (२ इति २०:१४,१५)।

घ) जकर्याह (२ इति. २४:२०)।

ङ) मीका (मीका ३:८)।

च) भविष्यद्वक्ता, सामान्य रूप से (जकर्याह ७:१२)।

टिप्पणियाँ –

च. सशक्तिकरण।

१) जरुब्बाबेल की मंदिर के पुन: निर्माण की क्षमता पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के अनुसार थी (देखें जक. ४:६,७; और जक. २:४-७)।

२) एलिय्याह को पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा उठा लिया गया था (देखें १ राजा १८:१२ और २ राजा २:१६)।

क) कई बार यहेजेकेल को पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा "उठा लिया" गया था (देखें यहेजेकेल ३:१४; ८:३; ११:१, २४; ४३:५)।

ख) इस विचार की तुलना प्रेरितों के काम ८:३९,४० में दिए गए नए नियम की घटना से करें।

छ. सारांश।

१) पुराने नियम में परमेश्वर के आत्मा को ज़्यादातर सक्षम बनाने वाली आत्मा के रूप में देखा जाता है।

क) उन्होंने किसी को एक विशिष्ट कार्य के लिए सक्षम किया जो वह स्वयं नहीं कर पाएगा।

ख) पवित्र आत्मा ने स्वाभाविक में कुछ अस्वाभाविक जोड़ दिया। उसने अलौकिक कार्य किये।

२) सामान्य रूप से पवित्र आत्मा थोड़े समय के लिए और कभी-कभी कार्य करते थे।

क) समय-समय पर शिमशोन पर पवित्र आत्मा उतरते थे।

ख) पवित्र आत्मा शाऊल पर उतरे, परन्तु कुछ समय बाद में उसके पास से चले गए।

ग) भविष्यद्वाणी करते समय एक भविष्यद्वक्ता पर पवित्र आत्मा उतरे।

३) यहाँ तक कि बिलाम के विषय में भी, जो इस्राएली नहीं था, इस्राएल और उसके उद्देश्य पर ध्यान दिया गया था।

टिप्पणियाँ —

चर्चा का बिन्दु

चर्चा करें कि पुराने नियम में किस प्रकार पवित्र आत्मा की गतिविधि को एक विशेष कार्य के लिए अस्थायी रूप से सशक्त करने के द्वारा लगातार प्रदर्शित किया गया था। आपको क्यों लगता है कि पवित्र आत्मा की शक्ति अस्थायी थी? यह नए नियम में आत्मा के शक्ति के विपरीत कैसे है?

२. मसीही कार्य।

क. आने वाला।

१) यशायाह ११:१,२ का अध्ययन करें।

क) आने वाला दाऊद के वंश से होगा।

(१) दाऊद का अभिषेक पवित्र आत्मा के द्वारा स्थायी रूप से किया गया।

(२) इसी प्रकार, पवित्र आत्मा आने वाले पर ठहरेगा और उस पर विश्राम करेगी।

ख) आने वाला पुरुष पहले से कहीं अधिक गहराई से प्रभु की आत्मा को ग्रहण करेगा। यह एक भारी अभिषेक होगा जिसमें छह अलग-अलग स्वरूप होंगे।

(१) बुद्धि का आत्मा।

(२) समझ का आत्मा।

(३) युक्ति का आत्मा।

(४) पराक्रम का आत्मा।

(५) ज्ञान का आत्मा।

(६) प्रभु के भय का आत्मा।

टिप्पणियाँ —

ग) आत्मा के इन छह पहलुओं को आदर्श गुण बनाने के लिए कहा जा सकता है।

(१) बौद्धिक (ज्ञान और समझ)।

(२) व्यावहारिक (युक्ति और पराक्रम)।

(३) धार्मिक (ज्ञान और प्रभु का भय)।

चर्चा का बिन्दु

क्या आप पिछले पदों और यशा. ११:३,५,९ के बीच संबंध देख सकते हैं?

२) यशा. ४२:१-४ का अध्ययन करें।

क) पवित्र आत्मा मसीह पर हैं।

ख) परिणाम यह है कि न्याय, नम्रता, कोमलता, दृढ़ता, और धैर्य उसकी सेवकाई के साथ पहचाने जाएंगे।

चर्चा का बिन्दु

मत्ती १२:१८-२१ के संदर्भ में इस प्रकार की सेवकाई पर चर्चा कीजिए।

३) यशा. ६१:१-३ का अध्ययन करें।

क) यहां, हम अभिषेक के विचार को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं क्योंकि यह आत्मा की गतिविधि से जुड़ा हुआ है।

ख) जो आने वाला है वह आत्मा के अभिषेक के द्वारा उसके दर्शन को पूरा करेगा।

४) जो आने वाले हैं उन पर आत्मा की मात्रा और गुणवत्ता उसके सामने किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में अधिक होगी। इसमें न्यायधीशों, भविष्यद्वक्ताओं, याजकों और राजाओं का विशेष अभिषेक शामिल है। अभिषेक पूरा हुआ क्योंकि सेवकाई पूरा होगी। इसके अलावा, सेवकाई के परिणाम पूरे होंगे (देखें यूहन्ना १७:४; १९:३०)।

टिप्पणियाँ –

b. मसीह के आगे आगे चलने वाले।

१) यूहन्ना बपतिस्ता देने वाला (लूका १:१५.१७ को देखें)।

क) यूहन्ना बपतिस्ता देने वाला पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं का चरम प्रतिनिधी था। (मलाकी ४:५,६ और मत्ती ११:१४)।

ख) उसी समय पर उसने पुराने नियम के कई भविष्यद्वक्तों का प्रतिनिधित्व किया।

(१) जब वह अपनी माता के गर्भ में ही था तभी वह पवित्र आत्मा से भर गया था।

(२) वह एक अनोखा व्यक्ति था जिसे अनोखा अभिषेक देकर, अनोखे उद्देश्य के लिए अनोखी सेवकाई करने हेतु भेजा गया था।

२) यीशु की माता मरियम (लूका १:३५)।

क) मनुष्यों के जीवन में पवित्र आत्मा द्वारा किये जाने वाले कामों की पराकाष्ठा अपने सबसे उच्च स्तर पर तब पहुंच गयी जब जब परमेश्वर के पुत्र को जनने के लिए एक कुंवारी को गर्भधारण करने की योग्यता प्रदान कर दी गयी।

ख) यहां पर पवित्र आत्मा द्वारा किसी विशेष उद्देश्य के लिए योग्यता प्रदान की गयी। यह योग्यता मरियम को यीशु की माता बनने के लिए दी गयी थी। यदि ताल्लुक मरियम के अपने उद्धार और शुद्धिकरण से नहीं था।

(१) उसे तब भी एक उद्धारकर्ता की जरूरत थी (लूका १:४७)।

(२) उसे फिर भी पवित्र आत्मा से भरे जाने की ज़रूरत थी (प्रेरितों १:१४)।

३) इलीशिबा और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला (लूका १:४१,४२ को देंखें)।

क) लूका १:४७ में इलीशिबा के आनंद की तुलना लूका १:४७ में मरियम के आनंद और लूका १०:२१ में यीशु के आनन्द के साथ करें।

ख) ध्यान दें कि जैसे ही इलीशिबा के गर्भ में पल रहा पवित्र आत्मा से भरा हुआ बालक, मरियम के गर्भ में पल रहे बालक के सम्पर्क में आया तो इलीशिबा पवित्र आत्मा से भरे गयी।

टिप्पणियाँ –

४) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का पिता जकर्याह (लूका १:६७,६८,७६ को देखें)।

क) जकर्याह के पवित्र आत्मा से भरने की योग्यता क्या थी? (लूका १:५-२३; ५७-६६ को देखें। खास तौर पर आप लूका १:७,१८,६० को देखें)।

ख) जकर्याह को विश्वास करने तथा आज्ञा मानने में दिक्कत हो रही थी।

ग) उसने विश्वास और आज्ञाकारिता हासिल करने के बाद पवित्र आत्मा पाया। यह तब हुआ जब उसने अपने बेटे का नाम यूहन्ना रखने की बात को मान लिया जबकि वह कोई पारिवारिक नाम नहीं था और दूसरी और ऐसा करना उसकी संस्कृति के विरूद्ध था।

५) शिमौन (देखें लूका २:२५-२७, ३०-३२, ३४, ३५)।

क) पवित्र आत्मा शमौन पर उतरा ताकि वह उसे यूसुफ, मरियम और बालक यीशु के आगमन के लिए तैयार कर सके।

ख) शमौन ने परमेश्वर को धन्यवाद कहा और आत्मा में मगन हो गया।

ग) उसे उद्धार के स्वभाव और यीशु की सेवकाई से सम्बन्धित भविष्यद्वाणी करने के लिए इस्तेमाल किया गया था।

६) मसीह के आगे मार्ग सुधारने वाले लोगों का सारांश।

क) इन सभी अभिलेखों में पवित्र आत्मा का काम लोगों को किसी विशेष उद्देश्य के लिए अलौकिक योग्यता प्रदान करना है।

(१) मसीह के विषय में गवाही के लिए।

(२) मसीह के लिए मार्ग तैयार करने के लिए।

(३) परमेश्वर के पुत्र को जन्म देने के लिए।

ख) इन सभी अभिलेखों में पवित्र आत्मा के काम पूरी तरह से यीशु मसीह पर सकेन्द्रित होते हैं। पवित्र आत्मा से सम्बन्धित सभी सन्दर्भ सीधे तौर पर यीशु के आगमन की ओर संकेत करते हैं।

टिप्पणियाँ –

ग) पवित्र आत्मा द्वारा चलाए गये लोगों में मज़बूत धार्मिक चरित्र था।

(१) धार्मिकता, नम्रता और समर्पण जैसे कुछ विशेष गुण हैं जो पवित्र आत्मा द्वारा इस्तेमाल किये जाने वाले लोगों में पाये जाते हैं।

(२) लूका १:६, १५, ३०, ३८; २:२५ पर ध्यान दें।

घ) पवित्र आत्मा के कार्य (केवल यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के मामले को छोड़कर) अस्थाई और उपलक्ष्यों पर किये गये कार्य थे।

(१) इलीशिबा, जकर्याह और शिमौन ने अस्थाई रूप में पवित्र आत्मा के द्वारा बातें की।

(२) एक प्रमुख उपलक्ष्य में पवित्र आत्मा मरियम पर उतरा।

ङ) पवित्र आत्मा के काम विश्वास, अपेक्षाओं और आज्ञाकारिता के सन्दर्भ में किये गये थे।

(१) मरियम के सम्बन्ध में पहले दिये गये बिन्दुओं का पुनरावलोकन करें। (लूका १:३८ और १:४५ को देखें)।

(२) शिमौन ने विश्वास के साथ तब तक प्रतीक्षा की जब तक कि उसने परमेश्वर के उद्धार को न देख लिया।

च) पवित्र आत्मा के कामों का वातावरण आनन्द और आशीषों से भरा हुआ था। (लूका १:४१.४७; १:६४, ६८; और लूका २:२७, २८, ३४ को देखें)

छ) पवित्र आत्मा द्वारा कार्य परमेश्वर के लोगों के बीच में किये गये थे।

(१) जकर्याह, इलीशिबा और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की याजकीय वंशावली पर ध्यान दें (लूका १:५)।

(२) लूका १:२७ और २:२५ पर ध्यान दें।

टिप्पणियाँ —

ग. यीशु की सेवकाई।

१) चारों सुसमाचारों में यीशु का बपतिस्मा और पवित्र आत्मा का उन पर उतरना यीशु की सेवकाई का आधार है (देखें मत्ती ३:१३-१७; मरकुस १:९, १०; लूका ३:२१, २२; यूहन्ना १:३२, ३३; और विशेष तौर पर लूका ३:२३)।

क) यीशु पर आत्मा का उतरना उनकी सम्पूर्ण सेवकाई के लिए था।

ख) वह एक स्थाई अभिषेक था (यूहन्ना १:३२)।

ग) यह एक असीमित अभिषेक था (यूहन्ना ३:३४)।

घ) यह यीशु के जीवन में पवित्र आत्मा का दूसरा सबसे बड़ा कार्य था।

(१) पहले, वह पवित्र आत्मा के द्वारा जन्मे थे।

(२) दूसरा, उन्हें सेवकाई के लिए पवित्र आत्मा द्वारा सशक्त किया गया था।

ङ) यीशु का पवित्र आत्मा के द्वारा अभिषेक किया जाना अनोखा था।

(१) आसमान खुल गया था (वास्तव में "दो भागों में बंट गया था")।

(२) आत्मा एक कबूतर के रूप में उन पर उतरा।

च) यीशु के अभिषेक ने त्रीएकता को प्रगट किया।

(१) पिता बोले।

(२) पुत्र के विषय में भविष्यवाणी की गयी।

(३) पवित्र आत्मा उतरे।

छ) यीशु के अभिषेक को यीशु की पहचान और उसकी सेवकाई की पुष्टि करने के लिए एक अवसर के रूप में इस्तेमाल किया गया था। (इस सन्दर्भ में यूहन्ना ६:२७ को देखें।)

टिप्पणियाँ –

२) किस प्रकार से यीशु का बपतिस्मा यीशु के पवित्र आत्मा द्वारा अभिषेक किये जाने से सम्बन्ध रखता है?

क) यीशु ने **धार्मिकता को पूरा** करने के लिए बपतिस्मा लिया था (यद्यपि वह निष्पाप थे) (मत्ती ३:१५)।

(१) उन्होंने यह काम मानवजाति से अपने आप को जोड़कर दिखाने के लिए किया था। उसने पश्चाताप और क्षमा की ज़रूरत को प्रगट किया।

(२) यह पहिचान पवित्र आत्मा के उतरने और यीशु की सेवकाई के शुरू होने की पृष्ठभूमि थी।

(३) लेकिन, बपतिस्मा लेने के कारण पवित्र आत्मा नीचे नहीं उतरे थे। पवित्र आत्मा का उतरना, पानी से बपतिस्मा लेने का आत्मिक पक्ष नहीं है। पानी के बपतिस्मा लेने का आत्मिक पक्ष वह धार्मिकता है जिसे यीशु ने पूरा किया है।

(४) बपतिस्मा और आत्मा का उतरना दो अलग अलग घटनाएं थीं। लूका ३:२१, २२ में दो अलग अलग घटनाओं की अनुभूति प्रतीत होती है। उन्होंने बपतिस्मा लिया। वह प्रार्थना करने लगे। तब पवित्र आत्मा उन पर उतरे।

ख) बपतिस्मा, पवित्र आत्मा के आने की आवश्यक तैयारी होती है। लेकिन, यीशु के बपतिस्में और उसके अभिषेक का उद्देश्य पूरी तरह से अलग था।

(१) यीशु के बपतिस्में का उद्देश्य सारी धार्मिकता को पूरा करना था।

(२) यीशु के अभिषेक का उद्देश्य यह था कि उस में सेवा करने के लिए सामर्थ्य हो (प्रेरितों १०:३८)।

टिप्पणियाँ –

३) यीशु का पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त किया जाना यीशु के एक ऐसे व्यक्ति के रूप में दिखाने से सम्बन्ध रखता है जिसने दूसरों को आत्मा का बपतिस्मा दिया (देखें यूहन्ना १:३३)?

क) ऐसा माना जाता है कि आत्मा आकर यीशु पर ठहर गया, वह भी दूसरों को उसी आत्मा के द्वारा सेवकाई के लिए अभिषेक देता है।

ख) उसे बिना किसी माप के पवित्र आत्मा के द्वारा अभिषेक दिया गया था (यूहन्ना ३:३४)। बपतिस्मा शब्द का अर्थ डुबोना या उण्डेला जाना होता है।" वह भी बिना किसी माप के दूसरों को अभिषेक देगा।

ग) एक बार फिर से हमें पानी के बपतिस्में और आत्मा के बपतिस्में में अन्तर को समझना होगा।

(१) पानी के बपतिस्में का सम्बन्ध पश्चाताप और धार्मिकता था।

(२) यह यीशु की मुख्य भूमिका को दर्शाता है। वह मुक्तिदाता है (यूहन्ना १:२९)।

(३) आत्मा में बपतिस्में का सम्बन्ध सेवकाई में सामर्थ्य से था।

(४) यह यीशु की भूमिका को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रगट करता है जो दूसरों को पवित्र आत्मा में बपतिस्मा देता है (यूहन्ना १:३२,३३)।

४) यीशु की सेवकाई का आरम्भ होना।

क) लूका ४:१ का अध्ययन करें।

(१) यीशु ने अपनी सेवकाई को एक ऐसे जन के रूप में प्रारम्भ किया था **जिस पर** आत्मा पूर्णता के साथ उतरा था।

(२) यीशु ने अपनी सेवकाई को एक ऐसे जन के रूप में प्रारम्भ किया था **जिस में** होकर पवित्र आत्मा पूर्ण रूप से अपने कार्य कर रहा था।

टिप्पणियाँ –

ख) अब लूका ४:१ और लूका ४:२ का एक साथ अध्ययन करें।

(१) पवित्र आत्मा ही यीशु को जंगल में ले गया जहां पर शैतान के द्वारा उसकी परीक्षा की गयी थी। यीशु की सेवकाई के प्रारम्भ में ही उसे शैतान के प्रलोभन का सामना करना था।

(२) उसे शैतान की हर एक चाल पर जयवन्त होना था। पवित्र आत्मा ने ही इस प्रक्रिया को प्रारम्भ किया था।

चर्चा का बिन्दु

यदि यीशु को पवित्र आत्मा की अगुवाई में होकर जंगल में जाकर शैतान की परीक्षाओं का सामना करना पड़ा, तो क्या हमें यह अपेक्षा करनी चाहिए कि हमारे साथ भी कुछ ऐसा ही हो सकता है? क्या ऐसा हो सकता है कि जंगल और परीक्षाओं का दौर वास्तव में परमेश्वर का हमें लम्बे समय की सेवकाई हेतू तैयार करने का एक तरीका हो?

ग) लूका ४:१४, १५ का अध्ययन करें।

(१) परीक्षाओं में विजय पाने के परिणाम स्वरूप पवित्र आत्मा यीशु के जीवन में उतरा। वह "पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से भरा हुआ वापस आया।"

(२) उन दो वचनों में घटनाओं के क्रम को देखें। यीशु द्वारा शिक्षा दिये जाने से पहले ही यीशु की **चर्चा** चारों ओर होने लगी। यीशु पर पवित्र आत्मा की सामर्थ्य प्रगट थी।

घ} लूका ४:१८, १९ का अध्ययन करें।

(३) हम पवित्र आत्मा के कामों और यीशु की सेवकाई के उद्देश्यों के बीच सम्बन्ध को देख सकते हैं।

(४) यह एक सिद्ध सेवकाई है। इसमें प्रचार, शिक्षा, चंगाई और छुटकारा सभी कुछ निहित है।

(५) पवित्र आत्मा के कार्य भी सिद्ध है। जैसा कि हम ने अन्य वचनों में भी देखा था, यीशु आत्मा से **भरे हुए**, आत्मा की **अगुवाई में** चलने वाले, आत्मा के द्वारा **सशक्त** और उसके द्वारा **अभिषिक्त** थे।

टिप्पणियाँ —

५) सेवकाई का आगे चलते रहना।

क) नीचे दिए गए वचनों में, यीशु के अपने शब्दों द्वारा निभाई जाने वाली सेवकाई में आत्मा की गतिविधि के बारे में आशय पर विचार करें: (मरकुस १:२१; मत्ती ७:२८; लूका ४:३२; यूहन्ना ६:६३)।

ख) निम्नलिखित वचन में, यीशु की चंगाई और छुटकारे की सेवकाई में आत्मा की गतिविधि के संबंध के आशय पर विचार करें: लूका ५:१७; मत्ती १२:२८; प्रेरितों. १०:३८।

ग) यीशु की सामर्थी सेवकाई दुष्ट की शक्तियों के विरोध में एक लगातार आक्रमण था मत्ती १२:२९ में यीशु कहते हैं कि बलवंत व्यक्ति (शैतान) को उसके माल को लूटने से पहले (उसके नियंत्रण में लोगों का छुटकारा) बांध दिया जाना चाहिए।

(१) वह बलवंत व्यक्ति पवित्र आत्मा की सामर्थ से बंधा हुआ है। जंगल में हुई घटना को याद करें। यीशु ने शैतान पर विजय पाई और शैतान को बंधन में डाल दिया। उसे यीशु के पास से जाना पड़ा (लूका ४:१३)। यीशु पवित्र आत्मा की सामर्थ से भर गये।

(२) इसका यह अर्थ है कि यीशु को सबसे पहले अपने विरुद्ध शैतान के आक्रमणों पर विजय प्राप्त करनी थी। तब वह दूसरों की सहायता करने के लिए बलवंत होगा।

घ) यीशु की सेवकाई का एक बड़ा भाग उस सेवकाई का विस्तार करना था (देखें लूका १०:१७-१९)।

(१) जो पवित्र आत्मा यीशु पर थे, उन्होंने उनको दूसरों को आत्मिक अधिकार सौंपने के योग्य बनाया। और अब वे पवित्र आत्मा की सामर्थ में होकर सेवकाई करने के लिए तैयार थे। आत्मा लगातार कार्य कर रहे हैं।

(२) वास्तव में "उसी घड़ी वह पवित्र आत्मा में होकर आनंद से भर गया" (लूका १०:२१) शब्द आनंद से भरना एक यूनानी शब्द का अनुवाद है जो साधारण आनंद से बढ़कर है और पवित्र आत्मा हमें आनन्द का संकेत देते हैं।

टिप्पणियाँ –

चर्चा का बिन्दु

यह स्पष्ट है कि यीशु को पवित्र आत्मा के अभिषेक की आवश्यकता थी (जो तब पूरा हुआ जब कबूतर के रूप में पवित्र आत्मा उन पर उतरा), ताकि वह परमेश्वर की पूर्ण सामर्थ से भर कर सेवकाई कर सकें। क्या हमें यह भी निष्कर्ष निकालना चाहिए कि हमें भी इसी अभिषेक की आवश्यकता है? समय निकाल कर कक्षा के लिए पवित्र आत्मा के अभिषेक और सेवकाई के लिए प्रार्थना करें तथा आत्मा के द्वारा नई सामर्थ प्राप्त करें।

३. कलीसिया के भीतर पाए जाने वाले कार्य (आने वाला आत्मा)।

क. दिलासा देनेवाले या सहायक (देखें यूहन्ना १४:१६,१७; यूहन्ना १४:२६; यूहन्ना १५:२६; यूहन्ना १६:७)।

१) यीशु अपने चेलों पर पवित्र आत्मा भेजेंगे।

२) आत्मा यीशु की सेवकाई को चालू रखेंगे (यूहन्ना १६:८)।

३) चेले यीशु की सेवकाई को पवित्र आत्मा के कार्य द्वारा बढ़ाएंगे।

४) जैसा कि पहले चर्चा की गई थी, पवित्र आत्मा पहले से ही नया जन्म के उद्देश्य से चेलों के पास आ चुके थे (यूहन्ना १४:१७; २०:२२)। हालाँकि, यह तब तक नहीं होने वाला था जब तक कि वह स्वर्ग पर नहीं चढ़ते ताकि आत्मा उन पर सुसमाचार की सेवा करने के उद्देश्य से उतर सके (यूहन्ना १६:७)।

५) जब स्वर्ग खुल गया और पवित्र आत्मा उतरे तो यीशु का आत्मा के द्वारा अभिषेक किया गया। अब आत्मा को स्वर्ग से भेजा गया है (उतरना) (१पतरस १:१२)।

६) दोनों ही मामलों में, पवित्र आत्मा की शक्ति प्राप्त करने वाले पहले से ही आत्मा से जन्मे थे। मरियम की गर्भ में यीशु का जन्म पवित्र आत्मा से हुआ था। यूहन्ना २०:२२ में हम देखते हैं कि जब यीशु ने अपने चेलों पर फूंका तो उन्होंने पवित्र आत्मा से जन्म पाया।

टिप्पणियाँ —

७) पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा की सामर्थ पाने वाले लोग विश्वासी जन थे।

क) पुनरुत्थान से पहले (इस प्रकार से, यूहन्ना २०:२२ और उनके नये जीवन से पूर्व), उनमें थोड़ा ही विश्वास था (देखें मत्ती ६:३०; ८:२६; १४:३१; १६:१८; १७:२०; मरकुस १४:५०; लूका २४:१२)।

ख) यूहन्ना २०:२२ में मन परिवर्तन के पश्चात (जैसा कि पतरस ने उस दिन पहले किया था, "वापस लौटने" के विचार से संकेत मिलता है) विश्वास के समुदाय का जन्म हुआ था। यह समुदाय तब सेवकाई के लिए शक्ति प्राप्त करने की प्रतीक्षा करेगा। यह सामर्थ एक उपहार है।

ग) पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के आने का विचार उन लोगों के लिए वरदान के रूप में ठहरा जो पहले ही नया जन्म पा चुके थे, प्रेरितों. ११:१७ में स्पष्ट रूप से यह पतरस के शब्दों में देखा जाता है (प्रेरितों. २:३८, ३९ पर भी मनन करें)।

घ) हमें यह समझना ज़रूरी है कि यूहन्ना २०:२२ में पवित्र आत्मा का फूंका जाना यूहन्ना १६:७ में पवित्र आत्मा के भेजे जाने की प्रतिज्ञा नहीं हो सकती, क्योंकि यीशु अभी तक स्वर्ग में महिमा पाने के लिए नहीं गए थे (देखें यूहन्ना १६:७ यूहन्ना २०:१७ के साथ; यूहन्ना ७:३९; फिलिपियों २:९-११; इफ़िसियों १:२०-२१)।

८) चेलों ने पवित्र आत्मा के साथ दो अलग-अलग घटनाओं का अनुभव किया। ये घटनाएँ दो अलग-अलग उद्देश्यों के लिए हुईं।

क) यूहन्ना २०:२२ में पहली घटना नये जीवन के उद्देश्य से थी।

ख) दूसरी घटना दूसरों की सेवकाई के उद्देश्य से थी।

टिप्पणियाँ —

ग) इस शिक्षा को देखने का एक और तरीका है यूहन्ना ४:१०-१४ को और यूहन्ना ७:३७-३९ के साथ अध्ययन करना।

(१) पवित्र आत्मा को जीवन के जल के रूप में दर्शया गया है. यह सीधा अनन्त जीवन से संबंधित है **(जल की नदी जो अनन्त जीवन पाने के लिए है)।**

(२) वहाँ पर आत्मा की भरपूरी भी थी। ये उन लोगों से आता है जो विश्वास करते हैं और यीशु की महिमा के बाद प्रकट होंगे। विश्वासियों की आशीषें विश्वासियों की सशक्त सेवकाई के माध्यम से दूसरों के ऊपर प्रवाहित होंगी (प्रेरितों के काम १:८ में आत्मा के सशक्तीकरण और सेवकाई के कार्य के बीच मौजूद संबंध पर विचार करें)।

(३) पिन्तेकुस्त के दिन जो पवित्र आत्मा उतरा वह केवल उन लोगों के लिए वहां था जो पहले से विश्वासी थे क्योंकि उसका उद्देश्य पुनः जीवन प्रदान करना नहीं था, बल्कि सेवकाई के लिए दृढ़ करना था (दिए गए बाइबल के वचन के आशय पर विचार करें यूहन्ना १४:१७; प्रेरितों २:३८; प्रेरितों. ५:३२; प्रेरितों. ८:१२-१६)।

चर्चा का बिन्दु

उद्धार के समय पवित्र आत्मा को पाने और सेवकाई के लिए पवित्र आत्मा के सामर्थ के बीच के अंतर पर आगे चर्चा करें। क्या आप दोनों के लिए हमारी जरूरत देख सकते हैं? क्या आपने दोनों का अनुभव किया है?
यदि नहीं, तो एक बार फिर से प्रार्थना करने के लिए समय निकालें कि परमेश्वर अपने आत्मा से उन्हें सामर्थ प्रदान करें।

ख. आत्मा के वरदान (देखें लूका ११:५-१३)।

१) इस खण्ड का सन्दर्भ वरदान देने के विचार से है (पद १३) पवित्र आत्मा को एक वरदान के रूप में परिभाषित किया गया है।

२) पवित्र आत्मा का यह वरदान उन्हें दिया जाता है जो पहले से ही परमेश्वर की संतान है (पद ११-१३)।

टिप्पणियाँ —

३) वरदान सेवकाई के उद्देश्य के लिए दिया जाता है। कहानी के संदर्भ पर ध्यान दें।

क) एक मित्र अपने मित्र की "सेवा" करना चाहता है जो देर रात उसके पास आता है।

ख) हालांकि, उसके पास सेवा करने के लिए कुछ भी नहीं है (देखें प्रेरितों के काम ३:६)।

ग) तो वह दूसरे मित्र के पास जाता है और उससे एक वरदान देने के लिए कहता है जिसे वह "सेवा" में इस्तेमाल कर सके। जो वरदान दिया जाता है वह सेवकाई के लिए होता है।

४) हमें पवित्र आत्मा का प्राप्त होना हमारी निर्भरता और इच्छा पर आधिरत है।

क) बड़ा संदर्भ लगातार प्रार्थना (पद ८-१०) का विचार है।

ख) बड़ा संदर्भ प्रार्थना और यीशु के साथ संबंध का है।

(१) लूका १०:३८-४२ हम को यह शिक्षा देता है कि यीशु के साथ हमारा संबंध सबसे महत्वपूर्ण है।

(२) लूका ११:१ में हम यीशु को प्रार्थना करते हुए देखते हैं। और हम यहाँ पवित्र आत्मा के आने और यीशु की प्रार्थना के बीच एक और संबंध को याद कर पाते हैं (समीक्षा करें लूका ३:२१)। जैसा कि हम आगे देखते हैं, हम यह भी अनुभव करते हैं कि चेले प्रतीक्षा कर रहे थे और प्रार्थना में लगे हुए थे (प्रेरितों. १:४, १४) जब पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा उन पर उतरे।

टिप्पणियाँ —

(३) चेले यीशु से कहते हैं कि हमें प्रार्थना करना सिखाएँ (लूका ११:१)। यीशु अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाते हैं (पद २,३)।

(क) इस प्रार्थना में यह विनती की कि राज्य आए। और यह हमें यहाँ पवित्र आत्मा के आने के विषय में बताता है।

(ख) हम इस प्रार्थना में रोज की रोटी के विषय में भी विनती को पाते हैं। यह रोटी जो यहाँ हमें स्मरण करायी गयी है वह आगे दूसरों की सेवकाई का प्रतिनिधित्व करती है।

५) अंत में, हमें इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि वरदान स्वयं पवित्र आत्मा हैं। यह केवल ऐसा नहीं है जो पवित्र आत्मा करते हैं या लाते हैं (जैसे हमें अन्य भाषाओं में बोलने के लिए सक्षम करना)। यह स्वयं आत्मा हैं जो वरदान के रूप में आते हैं। इसके अलावा, हम अपने आप को स्मरण दिला सकते हैं कि पवित्र आत्मा अन्य भाषा नहीं है (यद्यपि वह उस वरदान को प्रदान करते हैं)। पवित्र आत्मा परमेश्वर हैं। और इसलिए पवित्र आत्मा का वरदान स्वयं परमेश्वर का वरदान है।

ग. यीशु के अंतिम वचन (देखें प्रेरितों. १:४, ५) ।

१) आत्मा का आना पिता की प्रतिज्ञा है (प्रेरितों २:३३; लूका २४:४७-४९ को देखें)। इस प्रतिज्ञा को पिता की ओर से होने के लिए उन्हें पहले परमेश्वर की संतान होने की ज़रूरत है।

२) जैसा कि पहले भी चर्चा की जा चुकी है पवित्र आत्मा के बप्तिस्में का विचार उद्धार के विचार से अलग है। इसके लिए एक क्रम को अपनाना ज़रूरी है। उद्धार के द्वारा आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त होता है।

टिप्पणियाँ –

३) मर. १:८; लूका ३:१६; मत्ती ३:११ का पुनरावलोकन करें।

क) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की ओर से पानी का बपतिस्मा पश्चाताप और पापों की क्षमा के लिए था (मरकुस १:४; लूका ३:३)।

ख) यह कार्य उन एक की सेवकाई की तैयारी के लिए किये जा रहे थे जो वास्तव में पापों को अपने ऊपर उठा कर ले जा सकते थे (यूहन्ना १:२९)।

ग) उसके बाद, पश्चाताप का वही संदेश प्रचार किया गया। पानी के बपतिस्में की उसी विधी का इस्तेमाल किया गया। लेकिन, **एक छोटा सा परिवर्तन** यह हो गया कि **बपतिस्मा यीशु के नाम में दिया जाने लगा** (प्रेरितों २:२८)। उद्धार सबके लिए उपलब्ध हो गया। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा बपतिस्मा देने की तैयारी ने इस बात को स्वीकृत कर लिया कि उद्धार यीशु द्वारा क्रूस पर किये गये कार्यों का परिणाम है।

घ) यीशु द्वारा पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिया जाना एक अलग विषय है। बल्कि, हम इसका ज़िक्र दोबारा (लूका ३:१६) के बाद से प्रेरितों के काम १:५ तक नहीं सुनते हैं। इसके अलावा इसका उद्देश्य गवाह बनने के लिए सामर्थ्य प्रदान करना है (प्रेरितों १:८ और यूहन्ना २०:२२ में पवित्र आत्मा द्वारा नया जन्म दिये जाने के बाद दिखाई देता है।

(१) उद्धार का फल पवित्र आत्मा का बपतिस्मा होना चाहिए।

(२) पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाये बिना उद्धार इसलिए अधूरा है क्योंकि सेवकाई करने लिए उसके सशक्तिकरण की अभी भी प्रतीक्षा की जा रही है।

लेखक की टिप्पणीः

अनेकों पीढ़ियों से इस मुद्दे पर बहस हो रही है कि किसी व्यक्ति को कब और कैसे पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा दिया जाता है। सैद्धान्तिक मतभेद या धर्मशास्त्रीय पृष्ठभूमि इस अति महत्वपूर्ण और जटिल विषय के लिए ठोकर का कारण न बन पाए। हमें सेवा करने के लिए पवित्र आत्मा का अभिषेक चाहिए। इस बात कि परवाह न करते हुए कि पवित्र आत्मा के उतरने या उनके अनुभवों का वर्णन किस प्रकार से किया जाता है, पवित्र आत्मा के पूर्ण अभिषेक की खोज में रहें, जो हमें सुसमाचार का एक प्रभावशाली सेवक बनाने में सहायता करते हैं।

टिप्पणियाँ —

III. पवित्र आत्मा की सामर्थ्य।

क. आत्मा की शक्ति का परिचय।

लेखक का उदाहरण:

दो आदमी घूमने के लिए नाइगरा झरने पर गये (जो दुनिया का सबसे बड़ा झरना है)। रास्ते में ही उन्होंने ध्यान दिया कि नाइगरा नदि बहुत बड़ी और शक्तिशाली है। खास तौर पर झरने के थोड़ा ही पहले जहां नदि आकर गिरती है उसका बहाव और भी तेज हो जाता है।

एक व्यक्ति ने दूसरे से कहा, "चलों मैं तुम्हें दुनिया वह सबसे बड़ी शक्ति दिखाता हूं जिसका कभी इस्तेमाल नहीं हुआ है।" उसने उसे बुलाकर वह जगह दिखाई जहां पर नाइगरा झरने का पानी ऊपर नदि से आकर गिरता है। उसने कहा "वहां पर दुनिया की वह सर्वश्रेष्ठ ऊर्जा है जिसका इस्तेमाल नहीं हुआ है।"

दूसरा व्यक्ति इस बात से सहमत नहीं था। उसने कहा, "यह सत्य नहीं है। दुनिया की सबसे विस्फोटक शक्ति परमेश्वर के पवित्र आत्मा की विस्फोटक शक्ति है।"

दुर्भाग्यवश, यह सत्य है। पवित्र आत्मा मसीहियों को विस्फोटक तत्वों को देने के लिए तैयार है। लेकिन जिस तरीके से उसका इस्तेमाल किया जाना चाहिए, वैसा उसका इस्तेमाल हो नहीं रहा है।

अपने उदाहारण को लिखें:

टिप्पणियाँ –

१. प्रेरितों के काम १:८ से, शब्द **शक्ति** ग्रीक शब्द "**ड्यूनामिस**" से लिया गया है। इस शब्द का अर्थ "विस्फोटक शक्ति"। ग्रीक के इस शब्द से हमें "विस्फोटक या डायनामाइट" शब्द प्राप्त होता है।

२. यह विस्फोटक शक्ति कहां है? विस्फोटक शक्ति का इस्तेमाल किस लिए किया जाता है?

३. ग्रीक शब्द "**ड्यूनामिस**" (जिसका अनुवाद अधिकतर "शक्ति" के रूप में किया जाता है) के अध्ययन द्वारा हम इन प्रश्नों का एक व्यवस्थित उत्तर देने का प्रयास करेगें।

ख. यह विस्फोटक शक्ति कहां है? मुझे यह शक्ति कहां से प्राप्त हो सकती है?

१. वह स्थान जहां पर यह शक्ति **कभी नहीं** मिल सकती।

क. यह शैतान में नहीं है।

१) **ड्यूनामिस** शब्द का उल्लेख एक अधर्मी व्यक्ति के आने से जोड़कर दिया गया है (२थिस्स. २:९)।

२) लेकिन यहां पर **ड्यूनामिस** एक झूठी शक्ति है क्योंकि इसे एक धोखे के रूप में प्रगट किया गया है। (उस पद में लिखें झूठे चिन्हों पर ध्यान दें)। यह वह **ड्यूनामिस** है जो सच्ची **ड्यूनामिस** का स्थान लेना चाहती है।

३) शैतान की **ड्यूनामिस** शक्ति निम्न स्तर की है।

क) यह यीशु की **ड्यूनामिस** के अधीनस्थ है (इफि. १:२१)।

ख) यह यीशु द्वारा भेजे गये लोगों की **ड्यूनामिस** के अधीनस्थ है (लूका १०:१९)।

ख. यह बाहरी धर्मों में नहीं है। जो **भक्ति का भेष तो धरते हैं** परन्तु परमेश्वर की शक्ति अर्थात **ड्यूनामिस** का इनकार करते हैं (२तीमुथीयुस ३:५)।

टिप्पणियाँ –

२. इस विस्फोटक शक्ति को पाने का स्थान।

क. यह कलीसिया अर्थात सिर में हैं।

१) सर्वप्रथम, हम यह कह सकते हैं कि विस्फोटक शक्ति परमेश्वर में पायी जाती है।

क) यह हमें अपनी इच्छा पूरी करने के लिए नहीं दी गयी है। परमेश्वर की महान विस्फोटक शक्ति को प्रगट करने के बाद जिसके कारण वह लंगड़ा मनुष्य चलने लगा था, पतरस ने इस बात को हमेशा के लिए समझा दिया कि **विस्फोटक शक्ति** हमें अपने कामों के लिए नहीं दी गयी है (प्रेरितों. ३:१२)।

ख) यह परमेश्वर में पायी जाती है।

(१) पतरस आगे समझाते हुए कहता है कि यह **अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर** के पास पायी जाती है (प्रेरितों ३:१३)।

(२) पतरस को परमेश्वर ने अपनी सामर्थ्य प्रगट करने के लिए एक पात्र के रूप में इस्तेमाल किया था। इसलिए पौलुस २कुरिन्थियों ४:७ में **ड्यूनामिस शक्ति** के लिए कहता है कि **हमारे इन मिटटी के बर्तनों में खज़ाना छिपा हुआ है।**

लेखक का दृष्टान्त:

एक आदमी की कहानी बताई जाती है जो एक सड़क पर जा रहा था और उसने एक अजीब सा दृश्य देखा। एक आदमी बहुत तेजी के साथ हाथ के नल से पानी निकाल रहा था। वह काफी देर तक पानी निकालता रहा और वह कहीं से थकता हुआ नज़र नहीं आ रहा था। इस आदमी ने फैसला किया कि वह उसे पास से जाकर देखेगा। लेकिन जब उसने पास में जाकर देखा तो पता चला कि वह कोई आदमी नहीं है वरन वह तो एक लकड़ी का एक पुतला था जिस पर रंग करके आदमी के समान बना रखा था। उस लकड़ी के पुतले को नल के हत्थे से जोड़ रखा था जिसे देखने पर ऐसा लगता था मानों वह आदमी नल चला रहा है।

उसमें से पानी निकल रहा था। लेकिन वह उस लकड़ी के पुतले के नल चलाने की वजह से नहीं हो रहा था। बल्कि, वह एक तकनीकी कुंआ था और असल में पानी खुद उसके हाथों को ऊपर-नीचे कर रहा था।

ठीक ऐसा ही परमेश्वर की सामर्थ के साथ में भी है। जो व्यक्ति परमेश्वर के लिए कार्य करता है वह एक ऐसा व्यक्ति बन जाता है जिसमें पवित्र आत्मा कार्य करता है। आदमी को केवल अपने हाथ को हत्थे पर रखने की आवश्कता है।

टिप्पणियाँ —

अपने उदाहारण को लिखें:

२) विशेषतौर पर, विस्फोटक शक्ति पवित्र आत्मा में (प्रेरितों १:८), तथा यीशु के द्वारा व उसके नाम में पायी जाती है (प्रेरितों. ४:७-१० और १कुरि. १:२४ पर ध्यान दें।)।

लेखक का टिप्पणी:

मुझे विकलांग बच्चे के लिए की गयी प्रार्थना याद है जिसके हाथ मुड़े हुए थे। कोई दूसरा व्यक्ति प्रार्थना कर रहा था। उसने चंगाई के लिए प्रार्थना की। जिस क्षण उसने कहा कि यीशु के नाम में जो लड़का विकलांग था वह सामान्य दिखने लगा। उसकी टेड़ी टांगें सीधी हो गयीं और वह नृत्य करने लगा। जी हां, **यीशु के नाम में** एक विस्फोटक शक्ति है।

३) अन्त में, यह बात याद रखी जानी चाहिए कि विस्फोटक तत्व परमेश्वर की श्रेष्ठता के कारण कार्य करता है। **ड्यूनामिस अर्थात विस्फोटक शक्ति** परमेश्वर की श्रेष्ठता में प्राप्त होती है।

क) परमेश्वर ही इस बात का चुनाव करते हैं कि किसे विस्फोटक शक्ति मिले और किस काम के लिए मिले (रोमियों ९:१७)।

ख) परमेश्वर ही चुनाव करते हैं कि किस हद तक **विस्फोटक शक्ति** प्रदान की जाए (मत्ती २५:१५ का अध्ययन करें)। ध्यान दें कि **ड्यूनामिस शक्ति** (योग्यता) का वितरण **उसकी इच्छा के अनुसार** होता है।

ग) इस बात का चुनाव परमेश्वर ही करते हैं कि कब और किसको **ड्यूनामिस** दिया जाए (लूका ५:१७ के अर्थ पर ध्यान दें)।

टिप्पणियाँ –

ख. विस्फोटक शक्ति कलीसिया में हैः जो देह है (कलीसिया की सेवकाई)।

१) **विस्फोटक शक्ति** एकता, संगती और कलीसिया के भीतर गवाहियों में पायी जाती है (प्रेरितों. ४:३३ को देखें)।

क) ३२ वचन के आधार पर **विस्फोटक शक्ति** प्रगट होती है।

ख) हमारी कलीसियाओं के लिए इसके क्या अभिप्राय है?

२) **ड्यूनामिस अर्थात विस्फोटक शक्ति** प्रचार में पायी जाती है।

क) क्रूस का प्रचार करना (१ कुरि १:१८)।

ख) सुसमाचार का प्रचार करने में (रोमियों १:१६; प्रेरितों ८:१३; रोमियों १५:१९; मरकुस १६:२०)।

३) **ड्यूनामिस शक्ति** प्रभावशाली आत्मिक युद्ध में पायी जाती है।

क) प्रकाशितवाक्य १२:१० के अभिप्राय पर ध्यान दें।

ख) कैरल एनाकोण्डिया, अर्जेन्टीना के एक प्रचारक,दावा करते हैं कि उन्हें सफल आत्मिक युद्ध की वजह से ही उन्हें सफल व शक्तिशाली प्राप्त हुई है। वह शैतानी शक्तियों की सभा के प्रारम्भ होने से पहले ही उनके गढ़ों को ढा देते हैं। उसके बाद विस्फोटक तत्वों का धमाका होता है।

४) **डयूनामिस शक्ति** सेवकाई की बढ़ौतरी में पायी जाती है।

क) **डयूनामिस शक्ति** यीशु की सेवकाई की बढ़ौतरी में पायी जाती थी।

ख) लूका ६:१२,१३ से ६:१९ से ९:१ की प्रगति पर ध्यान दें।

टिप्पणियाँ —

ग. विस्फोटक शक्ति कलीसिया के भीतर पायी जाती हैः अर्थात उसके सदस्यों में।

१) **डयूनामिस अर्थात विस्फोटक शक्ति** नम्रता और कमजोरियों में पायी जाती है (देखें १ कुरि. २:३-५ और २ कुरि. १२:९)।

२) **ड्यूनामिस शक्ति** परमेश्वर के वचनों में पायी जाती है।

क) १कुरि. १४:११ का अध्ययन करें। ध्यान दें कि **भाषा का अर्थ भाषा की शक्ति है।**

ख) वचनों में शक्ति है (१कुरि २:४; नीतिवचन १५:१; नीति. २६:२२; यशा. ५०:४; मत्ती १२:३६, ३७; याकूब ३:१-१२)।

लेखक का टिप्पणी:

एक खुंखार राजनेता ने एक बार कहा, "मुझे २६ सेनापति दो और मैं सारे संसार को जीत लूंगा।" जिन सेनापतियों की वह बात कर रहा था वे अग्रेजी भाषा के २६ अक्षर थे जिनका इस्तेमाल प्रिटिंग प्रेस में किया जाता है जिससे इंगलिश भाषा का निमार्ण होता है।

३) **ड्यूनामिस** कष्टों में पायी जाती है। इसके सम्बन्ध को २तीमुथीयुस १:८ में देखें।

४) **ड्यूनामिस** यीशु के साथ सम्बन्ध में पायी जाती है (लूका ८:४६ और लूका ६:१९)।

क) किसी के द्वारा यीशु को **छुए जाने** के कारण **ड्यूनामिस शक्ति** प्रगट होती है।

ख) हम भी आज यीशु के साथ व्यक्तिगत और घनिष्ठ सम्बन्ध बनाने के द्वारा यीशु को **छू** सकते हैं।

टिप्पणियाँ —

५) **डयूनामिस** विश्वास में पायी जाती है।

क) गलातियों ३:५ को देखें (**डयूनामिस** का अनुवाद **चमत्कार** किया गया है)।

ख) इब्रानियों ११:११ को देखें (**डयूनामिस** को **योग्यता** के रूप में देखा गया है)।

ग) मरकुस ५:३०,३४ को देखें।

घ) मत्ती १३:५४-५८ को देखें (**डयूनामिस** को पद ५८ में **चमत्कार** के रूप में देखा गया है)।

६) **डयूनामिस** अर्थात **विस्फोटक शक्ति** आज्ञाकारिता में पायी जाती है।

क) प्रकाशितवाक्य ३:८ में **ड्यूनामिस** और आज्ञाकारिता के बीच सम्बन्ध को देखें।

ख) देखें कि किस प्रकार से जंगल में यीशु की आज्ञाकारिता लूका ४:१४ में पायी जाने वाली ड्यूनामिस शक्ति से सम्बन्ध रखती है (इसके अलावा प्रेरितों. ५:३२)।

३. फिर विस्फोटक शक्ति कहां है? मैं इसे कैसे प्राप्त करता हूँ?

क. एक ऐसा शब्द है जिसमें इसका उत्तर मिल जाता है। और वह शब्द है **मृत्यु।**

१) आप इसे अपने आप के लिए मरके प्राप्त कर सकते हैं। विस्फोटक शक्ति तब प्राप्त होना प्रारम्भ हो जाती है जब हम अपने जीवन को परमेश्वर के हाथों में सौंपना प्रारम्भ कर देते हैं।

२) इससे पहले के सभी बिन्दुओं का सम्बन्ध अपने आप के लिए मरने तथा अपने क्रूस को उठाने से जुड़ा है।

क) अपनी इच्छाओं के लिए मरना ताकि आप कह सकें कि आप में शक्ति है।

ख) सम्पत्ति के लिए मर जाना ताकि आप दूसरों के साथ साझा कर सकें।

ग) क्रूस पर यीशु की मृत्यु का प्रचार करना।

घ) अपने राज्य की स्थापना करने की इच्छा के लिए मरना और इसके बजाय सेवकाई को बढ़ाने के लिए तैयार रहना।

टिप्पणियाँ –

ङ) अपने घमण्ड के लिए मरना।

च) आरामदायक जीवन व्यतीत करने की इच्छा को मारना वरन कष्ठ उठाने के लिए तैयार रहना।

छ) शरीर की अभिलाषाओं के लिए मरना वरन आज्ञाकारी बनना।

ख. वास्तव में प्रश्न यह नहीं होना चाहिए किः **विस्फोटक शक्ति कहां है?** प्रश्न यह है किः **क्या आप मरने के लिए तैयार है?**

१) प्रेरितों के काम १:८ में हमें ग्रीक शब्द ड्यूनामिस मिलता है जो ग्रीक शब्द मातिर से जुडा हुआ है (जिसका अर्थ साक्षी बनना है- जो देखी और अनुभव की गयी बातों के बारे में बताता है)।

२) इस ग्रीक शब्द से हमें शब्द "martyr अर्थात शहीद" मिलता है जिसका अर्थ है कि वह व्यक्ति देखी गयी या अनुभव की गयी बातों को इतनी दृढ़ता से जानता है कि वह उस गवाही की सच्चाई को बताने के लिए अपनी जान दांव पर लगा सकता है। जी हां, **मृत्यु** और **ड्यूनामिस अर्थात विस्फोटक शक्ति** अविभाज्य हैं।

३) इस प्रकार के सम्बन्ध को आप फिलि. ३:१०; प्रका. ५:१२; यूह. १२:२४; यूहन्ना १५:२ को भी) में देखें।

३. अतः यह विस्फोटक शक्ति कहां है?

क. वह स्रोत परमेश्वर हैं।

ख. वह बर्तन कलीसिया है (इफिसियों १:१९;३:२०)।

१) ध्यान दें कि पिछले दो वचनों में **ड्यूनामिस शक्ति** कैसे **हमारे लिए और हम में कार्य करती है।**

२) इसमें ऐसा नहीं लिखा है कि यह केवल कुछ ही वरदान पाए हुए प्रचारकों में कार्य करती है। कलीसिया मसीह की देह है। यह विस्फोटक शक्ति सभी सदस्यों के लिए उपलब्ध है।

टिप्पणियाँ –

ग. विस्फोटक शक्ति किस लिए है?

१. परिचय

क. हमें इस बात का ध्यान देना चाहिए कि **ड्यूनामिस** शक्ति हमेशा यीशु को महिमा देने के उद्देश्य से दी गयी है। (२थिस्स. १:११,१२)

ख. इसलिए **ड्यूनामिस** शब्द का अन्तिम अध्ययन वास्तव में उन तरीकों का अध्ययन है जिससे यीशु को महिमा मिलती है।

२. **ड्यूनामिस** का उपयोग।

क. अन्त समय के लिए विस्फोटक शक्ति।

१) यीशु मसीह **ड्यूनामिस** शक्ति के साथ वापस आएंगे (मत्ती २४:२९,३०)।

२) हमें **ड्यूनामिस** के द्वारा मृतकों में से उठा लिये जाएंगे। (१कुरि. ६:१४)

३) न्याय करने के लिए **ड्यूनामिस** (सामर्थी अग्निमय स्वर्गदूत होगें) (२थिस्स. १:७,८)।

४) परमेश्वर के राज्य के सम्पूर्ण काल में **ड्यूनामिस** शक्ति उसके साथ होगी (प्रका. ११:१७)।

५) एक झूठी **ड्यूनामिस** शक्ति का इस्तेमाल शत्रु के द्वारा अविश्वासियों को धोखा देने के लिए किया जाएगा (२थिस्स. २:९)।

ख. सामान्य लोगों की आशीष के लिए विस्फोटक शक्ति।

१) सामान्य प्रकाशनों में **ड्यूनामिस** शक्ति होती है (रोमियों १:२०)।

२) **ड्यूनामिस शक्ति**, संसार का पोषण करती, समर्थन करती और उसे चलाती है। (इब्रानियों १:३)

ग. विश्वासियों की व्यवहारिक आशीष के लिए विस्फोटक शक्ति।

१) **स्थिरता, धीरज और आनन्द** पाने के लिए (कुलु१:११)

२) सुरक्षित रहने के लिए (१पतरस १:५)।

३) आशा पाने के लिए (रोमियों १५:१३)।

टिप्पणियाँ —

घ. सुसमाचार फैलाने के लिए विस्फोटक शक्ति।

१) सुसमाचार प्रचार करने के लिए **ड्यूनामिस शक्ति** है (प्रेरितों ४:३३)

२) लोगों को उनके पापों से फिराने के लिए ड्यूनामिस शक्ति है (लूका १:१७)।

३) लोगों को परमेश्वर की ओर फिरने में सहायता करने के लिए ड्यूनामिस शक्ति है (रोमियों १:१५,१६)।

४) किसी योजना को पूरा करने के लिए ड्यूनामिस शक्ति है।

क) पुराने नियम में (रोमियों ९:१७ में missiological अभिप्राय को देखें)।

ख) नये नियम में (रोमियों १५:१९ में missiological अभिप्राय को देखें)।

ग) सभी विश्वासियों के लिए (प्रेरितों १:८)।

५) यीशु के सुसमाचार और उसकी पहिचान की पुष्टि करने के लिए **ड्यूनामिस (चमत्कार और आश्चर्य कर्म)** (प्रेरितों २:२२ और मरकुस १६:२०)।

ङ. कलीसिया का निर्माण करने के लिए विस्फोटक शक्ति।

१) कलीसिया को तैयार करने के लिए **ड्यूनामिस।**

क) तोड़ों के दृष्टान्त में पाये जाने वाले कलीसिया के अभिप्राय या मतलब पर ध्यान दें।

ख) मत्ती २५:१५ में **ड्यूनामिस** को योग्यता या कौशल के रूप में देखा गया है।

ग) यह दृष्टान्त तोड़ों या वरदानों के उपयोग और उन्हें बढ़ाने के बारे में बताता है।

चर्चा का बिन्दु

इफिसयों ४:११,१२ में पाये जाने वाले गुणन के सिद्धान्त के प्रकाश में इस विषय पर चर्चा करें।

२) कलीसिया तथा प्रत्येक विश्वासी को परिपक्व बनाने के लिए **ड्यूनामिस शक्ति** (देखें कुलु. १:२८,२९)।

टिप्पणियाँ –

चर्चा का बिन्दु

इफिसियों ४:११-१३ में दिये गये सिद्धान्तों के प्रकाश में इस बिन्दु पर चर्चा करें।

च. सेवा करने के लिए दी गयी विस्फोटक शक्ति।

१) अनुशासित करने के लिए **ड्यूनामिस** (१कुरि.५:४)।

२) देने के लिए **ड्यूनामिस (योग्यता)** (२कुरिन्थियों ८:३)।

३) **चमत्कारों** के लिए ड्यूनामिस।

क) यीशु की सेवकाई में (लूका १९:३७)। ध्यान दें कि यहां पर **ड्यूनामिस** को चमत्कारों के रूप में देखा गया है।

ख) स्तिफनुस की सेवकाई में (प्रेरितों ६:८)।

ग) सामान्य तौर पर (१कुरि.१२:१०)। ध्यान दें कि यहां पर **ड्यूनामिस** को चमत्कारों के रूप में देखा गया है।

४) दुष्ट आत्माओं को निकालने के लिए।

क) यीशु की सेवकाई में (लूका ४:३६)।

ख) उनके चेलों की सेवकाई में (लूका १०:१९;९:१; प्रेरितों १९:११,१२)।

३. निष्कर्ष।

क. **विस्फोटक शक्ति** किस लिए दी गयी है?

१) यह शक्ति ऊपर दिये गये सभी उद्देश्यों तथा उससे भी ज़्यादा कामों को करने के लिए दी गयी है (२पतरस १:२,३)। ये सारी बातें या कार्य यीशु की महिमा के लिए हैं (२ थिस्सलुनीकियों १:११,१२)।

२) विस्फोटक शक्ति एक ऐसे चिन्ह के समान होनी चाहिए जो हमेशा यीशु की ओर संकेत करती हो। यह सत्य है क्योंकि विस्फोटक शक्ति पवित्र आत्मा में है और पवित्र आत्मा सर्वदा यीशु की ओर अगुवाई करते हैं।

टिप्पणियाँ —

ख. विस्फोटक शक्ति कहां है?

१) वह यीशु के नाम में है (मरकुस १६:१७,१८)।

२) अतः, यह शक्ति हमारी मृत्यु में हैं क्योंकि यीशु में होने के लिए हमें अपने आप में मरना पड़ता है।

ग. हमें पवित्र आत्मा को यह अनुमति प्रदान करनी चाहिए कि वह हमें बार-बार **इयूनामिस** से भरें।

पवित्र आत्मा

टिप्पणियाँ —

पवित्र आत्मा: अंतिम टिप्पणियां

[१]'जे.रोडमैन विलियम्स, पवित्र आत्मा: उपस्तिथि व शक्ति- Regent University course (Virginia Beach, VA: CBN University Media Center, १९८६) की कक्षाओं में से ली गयी शिक्षा है। इस भाग की रुपरेखा के अधिकतर बिंदुओं को सीधे तौर पर डॉ. विलियम्स शिक्षाओं से लिया गया है। जिसका उपयोग लिखित अनुमति के द्वारा किया गया है।